INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य और भाषा पर प्रभाव

नाम:- समृद्धि संजय सुर्वे
निर्देशक डॉ. अनिल विशवनाथ काळे
महाविद्यालय का नाम : प्रो. रामकृष्ण मोरे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
आकुर्डी, पुणे 44

शोध सारांश

वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया जो व्यापार, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से दुनिया की अर्थव्यवस्था, समाज, संस्कृति को जोड़ती है तथा परस्पर निर्भर रहती है।जिससे वस्तुओं, सेवाओं, सीमाओं के आर पार आवागमन होता है। दुनिया एक दूसरे से जुड़ी रहती हैं।

वैश्वीकरण के मुख्य पहलुओं में आर्थिक,सांस्कृतिक,तकनीक,राजनीतिक रूप देखने को मिलते हैं। वैश्वीकरण का प्रभाव संस्कृति समाज के साथ-साथ साहित्य और भाषा पर पड़ता है। भाषा की सीमाएं बढ़ती है। साहित्य पर वैश्वीकरण का गहरा प्रभाव है। वैश्विक स्तर पर विचारों,शैलियोऔर विषयों का आदान प्रदान होने की वजह से साहित्य सहज और सुलभ बनता है।स्थानीय संस्कृति, विभिन्न विमर्श, चुनौतियां सामने आती है।

वैश्वीकरण से डिजिटल माध्यमों द्वारा तथा अनुवाद के कारण साहित्य विश्वभर के पाठकों तक पहुंचता है। साहित्य में वैश्विक मुद्दों पर चर्चा होती है। नई साहित्यिक शैलियों का विकास होता है।

वैश्वीकरण भाषाओं कोमिलता है, जिससे भाषाओं का आदान-प्रदान, प्रसार नई शैलियों का विकास होते पाया जाता है। वैश्वीकरणके प्रभाव के कारण भाषाओं के शब्द एक दूसरे में शामिल हो जाते है। भाषा के विकास के साथ उनके मूल रूप लुप्त होने की चुनौती सबके सामने है।

वैश्वीकरण ने भाषाओं को संरक्षित करने तथा मंच प्रदान करने से भाषा की विरासत को बचाया जा सकता है। हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर बनाए जाने पर वैश्विक स्तर पर एक ताकतवर भाषा के रूप में उभर कर आ सकेगी।

संकेत शब्दवैश्वीकरण,हिंदी भाषा का महत्त्व, परिवर्तन, साहित्य पर प्रभाव, चुनौतियां, आवश्यक प्रयास

प्रस्तावना :

वर्तमान यूवैश्वीकरण से जुड़ा हुआ है।वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव विश्व के हर हिस्से पर दिखाई दे रहा है। शिक्षा, व्यवसाय, बाजारवाद, नौकरी,साहित्य, भाषा आदि सभी को वैश्वीकरण के परिवर्तन से गुजरना पड़ रहा है। अतः वैश्वीकरण के इस दौर में भारत भी पीछे नहीं हैं। भारतीय बाजार घि ताकत के साथ भाषाओं का विकास भी होगा। भारतीय भाषा और हिंदी भाषा का विस्तार होगा, जिससे हिंदी व्यापक भूमिका दर्शाएगी। वह सिर्फ विज्ञापन की भाषा न रहकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार प्रचार करेगी। पहले से ही मॉरिशस,सूरीनाम,फिज़ी आदि देशों में अधिकतर लोगों की भाषा हिंदी है। हॉलीवुड फ़िल्म ओस में भी हिंदी का प्रयोग हो रहा है। हिंदी शब्दों का प्रयोग जैसे अवतार अंग्रेजी फ़िल्म का शीर्षक है।

संचार माध्यमों में भी हिंदी का प्रचार प्रसार अधिक है। हिंदी भाषा बोलने वालों की संख्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। हिंदी भाषा का सामर्थ्य, विविधता, समृद्धता, नयापन,वैज्ञानिकता आदि के कारण हिंदी भाषा विश्व में फैली हुई है। उसका प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी भाषा में विविध भाषाओं के शब्द अपनाने के कारण उस का प्रचलन बढ़ रहा है ओर हिंदी भाषा विस्तारित हो रही है।

वैश्वीकरण ने हिंदी को विकास विस्तार की दिशा तो दे दी परन्तु नई चुनौतियों को भी सामने लाकर खड़ा किया है, जिसका समाधान हमें ढूंढना है। जिससे हिंदी नए विकास पथ पर गर्व से चल सके।

वैश्वीकरण की अवधारणा :

वैश्वीकरण का अर्थ विभिन्न विचार विभिन्न विचार, पूंजी, वस्तु और लोगों द्वारा उत्पन्न एक ऐसा प्रवाह जो विश्व को परस्पर जोड़े रखता है। वैश्वीकरण यह नई संकल्पना है परन्तु प्राचीन काल से ही इसका अस्तित्व है। प्राचीन काल से ही संस्कृतियां, विचारों का आदान प्रदान हो रहा है। वर्तमान युग में इसका प्रभाव, गति अधिक तीव्र हो गई है। विस्तृत धरातल, प्रवाह के कारण वैश्वीकरण बढ़ता जा रहा है।

वैश्वीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्था राजनीतिक बदलाव और सांस्कृतिक वातावरण में परिवर्तन दिखाई देता है। वैश्वीकरण सभी स्तरों पर सकारात्मकता से स्वीकार नहीं जाता। वैश्वीकरण से आयी पश्चिमी वेशभूषा, संस्कृति को बढ़ावा तो मिल रहा है पर विरोध अभी हो रहा है। इसका कारण भारतीय संस्कृति पर होने वाला वि घातक प्रभाव भी है। फिर भी वैश्वीकरण वर्तमान समय का यथार्थ है, जिसे स्वीकार कर आगे बढ़ना हमारा कर्तव्य है।वैश्वीकरण के कारण संपूर्ण विश्व में जैसे परिवर्तन की लहर दौड़ रही है 20 वीं शती के उत्तरार्ध से शुरुआत हुआ वैश्वीकरण तीव्र गति से सैकड़ों देशों में फैल रहा है। भारत देश की बात करें तो सैकड़ों भारतीय बाकी देशों में प्रवास निवास करते हैं। वहाँ पर किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा का प्रयोग अवश्य होता है।

वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर प्रभाव

हिंदी शब्द व्यापक अर्थ में लिया जाता है, मैं खड़ी बोली साहित्यिक हिंदी जो हिंदी प्रदेशों की भाषा और भारत की राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। जिसे परिनिश्चित मानक हिंदी के नाम से भी जाना जाता है। खड़ी बोली हिंदी दिन प्रतिदिन नए शब्दों के साथ नयापन अपना रही है ओर विश्व स्तरीय भाषा के रूप में उभरकर आ रही है।

डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार "किसी भाषा के प्रचार क्षेत्र में जैसे जैसे विस्तार होता है उसके एकाधिक रूप विकसित होने लगते हैं।"1

हिंदी भाषा वैश्विक स्तर परप्रसारित होने पर भी अपने देश के कई क्षेत्र में उपेक्षित होने की वजह से संपूर्ण हिंदी नहीं बन पा रही है। आम जनमानस में विचारों की त था मानसिकता में परिवर्तन लाना आवश्यक है। यही काम हिंदी भाषा का वैश्वीकरण करते हुए दिखाई दे रहा है।

वैश्वीकरण के कारण हिंदी के स्वरूप में आए परिवर्तन उल्लेखनीय है । इसमें पश्चिमी सभ्यता और विदेशी भाषा के प्रभाव से हिंदी का संरक्षण करना प्रमुख उद्देश्य होगा।

पहले हिंदी में अरबी और फारसी शब्दों की भरमार के कारण शुद्ध हिंदी पर उनका प्रभाव रहा। अंग्रेजी वर्चस्व के युग में अंग्रेजी के प्रभाव के कारण वह अंग्रेजी मिश्रित भाषा के रूप में सामने आ रही है। हिंदी का जैसे जैसे प्रचार प्रसार हो रहा है वह विविध रूपों में हमारे सामने प्रस्तुत हो रही है। अतः उसके विकसित रूप जैसे व्यापार की हिंदी, में नक हिंदी, जनसंचार भाषा हिंदी, साहित्यिक हिंदी, संसदीय हिंदी, बोलचाल की हिंदी, कार्यालय इन हिंदी आँधी रूप प्रचलित हो रहे हैं ।

अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिए भाषा भी कि भी आवश्यकता होती है । हर प्रदेश की भाषा अलग होने के बावजूद संपर्क भाषा के माध्यम से विश्व एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। इसी से देश की तरक्की कर पा रहे हैं। वैज्ञानिक, तकनीकी तरक्की ओर प्रगति के कारण संचार क्षेत्र में इंटरनेट के माध्यम से ईमेल, फेसबुक,, ट्विटर, वेबसाइट, ब्लॉग, व्हाट्सएप, आदि का विकास हो रहा है। इन सभी बातों का प्रभाव हिंदी भाषा के विकास पर भी पड़ रहा है। इन्हीं माध्यमों के आधार पर हिंदी भाषा जन सामान्य से लेकर वैश्विक स्तर तक सभी को अपना पाई है। हिंदी भाषा और तकनीकी माध्यम द्वारा हम विश्व के किसी भी देश में अपने विचार, संस्कृति को प्रसारित कर सकते हैं। वैश्वीकरण का मूल ही बाजारवाद है। अपने देश में निर्मित वस्तु को अधिक से अधिक अर्थार्जन के लिए बाजार में लाना। बाहर के उत्पादन सस्ते दामों में उपलब्ध होने के कारण भारतीय लोग उसकी तरफ आकर्षित होते हैं। इसके चलते मॉल संस्कृति का विकास हो रहा है । एक ही छत के नीचे सभी वस्तुओं का उपलब्ध होना आकर्षण केंद्र बनता जा रहा है। उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए ओर वस्तु का महत्त्व समझने के लिए अधिकतर विग्यापनों में हिंदी भाषा का प्रयोग करना पड़ रहा है। भारत में वस्तुओं की बिक्री के लिएविग्यापनों में सर्व कालिक भाषा हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है।

डॉ. अशोक तिवारी के अनुसार"टी.वी., रेडियो, इंटरनेट, समाचार पत्र आदि संचार माध्यम भी हिंदी भाषा को अधिक बढ़ावा दे रहे हैं। टीवी के अधिकांश चैनल हिंदी भाषा का ही उपयोग कर रहे हैं, क्योंकि वे अपने अधिक से अधिक कार्यक्रम उस जनता तक पहुंचाना चाहते हैं जो भारत के गांवों में रहती है और जहाँ पर हिंदी भाषा व्यवहार में लाई जाती है।"2

फ़िल्म और टीवी चैनल ने भी हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में योगदान दिया है। फ़िल्म और टीवी चैनल पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम ओं की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। हमारे साहित्यकार, पत्रकार भी हिंदी भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं। हिंदी को विश्व भाषा बनाने का श्रेय इन माध्यमों को भी जाता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिंदी को विश्व भाषा बनाने के भरकस प्रयत्न किए हैं।

बनावट की दृष्टि से हिंदी भाषा का स्वरूप सरल और वैज्ञानिक है। उसे उच्चारण अनुसार ही पढ़ा तथा लिखा जाता है। इस भाषा के द्वारा सभी प्रकार के भावों और विचारों को प्रकट किया जा सकता है। सर्वगुण संपन्न भाषा है । भारत में हिंदी भाषी राज्यों के अतिरिक्त सभी राज्यों में हिंदी को सामान्य रूप से पढ़ने लिखने वाले लोग भी बहुत है। विकसित देशों में विश्वविद्यालय में हिंदी पीठ स्थापित है ओर वहाँ विदेशी छात्र बड़े चाव से हिंदी भाषा सीखने और साहित्य पढ़ा करते हैं।

सहेली शरण के अनुसार "दुनिया की कोई भी भाषा अपनी व्यापक उपयोगिता से ही ताकत बनाती है। हिंदी ने इस अर्थ में अपनी योगिता को खूब साबित किया है। हिंदी आज सबसे प्रभावशाली भाषा के रूप में हमारे सामने है। यह हिंदी की ग्रहणशीलता है, जो नएपन को उदारता के साथ स्वीकार करती है। इसे न तो नए माध्यमों का दुख है न ही नए शब्दों और नई भाषाओं से भय।"3

हिंदी भाषा के सामने कई चुनौतियां हैं उन चुनौतियों का समाधान हम इस प्रकार से कर सकते हैं - हिंदी को आम जनता से जोड़कर उसे सामान्य भाषा के रूप में व्यवहार में लाना आवश्यक है। वैज्ञानिक, तकनीकी क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाया जाए। हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएं। हिंदी एक समृद्ध और गतिशील भाषा है यह मानसिकता बनाई जाए। हिंदी के सॉफ्टवेयर विकसित कराए जाएं। आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को स्थान मिले ओर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए व्यापक योजनाएं बनाई जाएं।

स्वतंत्रता के बाद कई राज्यों की भाषा ओर अधिकतर लोगों की बोलचाल की भाषा के कारण हिंदी राजभाषा का सम्मान प्राप्त कर चुकी है। संस्कृत से हिंदी भाषा का निर्माण होने के कारण यह संस्कृत निर्मित अन्य भाषाओं से भी संबंधित है। भारत के हर एक स्थान पर हिंदी भाषा का साहित्य भी मिलता है।हिंदी के शब्द भंडार में लगातार वृद्धि हो रही है। हिंदी विकासशील भाषा है। देश के सभी ज्यादातर अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी भाषा के शब्द हिंदी में सम्मिलित हैं। हिंदी केवल प्रादेशिक भाषा न रहकर केंद्रीय व्यवहार तथा कार्यालय इन भाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी है। हिंदी भाषा को अधिकतर लोगों तक पहुंचने के लिए हमें प्रयत्न करना होगा।

वैश्वीकरण का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

साहित्य जीवन का प्रतिबिंब होता है। साहित्यकार अपने चारों ओर जो देखता, सुनता, अनुभव करता है उसे अपनी रचनाओं में उतारता है। उसी रचना को छंद, अलंकार,रस से शृंगारित करता है। साहित्यकार अपने अनुभवों को अधिक सुंदर रूप में पुनः निरूपित कर सुंदर रचना करता है। साहित्य और जीवन अनुभव घनिष्ठ संबंध हैं। जीस समाज का उत्थान पतन देखा गया है वही साहित्य में विद्यमान होता है।

हिंदी साहित्य में आदिकाल में भारतीय राजाओं का सुन्दर रमणीयो का प्रेम जीतना,शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का प्रसंगों का साहित्य में वर्णन किया गया है। उस काल के साहित्य में शृंगाररस, वीर रस का समन्वित वर्णन मिलता है। भक्ति काल में भक्ति की विनयशीलता दिखाई देती है। रीतिकाल में जहांगीर ओके शासनकाल की रचनाएं मिलती है। आधुनिक काल में आते आते हिंदी साहित्य परिस्थिति जन्य होता चला गया । स्वतंत्रता संग्राम से लेकर विविध विमर्शों पर लेखन शुरू हुआ। समाज का वास्तविक चेहरा साहित्य में उतारने लगा। समाज को जागृत करने का कार्य साहित्य करने लगा। समाज राष्ट्रीय भावना के साथ साथ सामाजिक,, आर्थिक विषमता,ज़मींदारी, स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार, समाज का व्यंग्यात्मक चित्रण होने लगा। जिससे समाज में परिवर्तन की लहर दौड़ी।

साहित्य से सभ्यता संस्कृति राष्ट्रीयता की रक्षा की जाती है जो गीत क्रांतिकारियों को जगाकर फांसी तक हिम्मत देते थे वह साहित्य की अमूल्य देन है। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचा गीत वंदेमातरम् संघर्ष काल में राष्ट्रीय नारा बन गया। राष्ट्रीय त्योहारों पर गाए जाने वाले गीत साहित्य की धरोहर है। माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित कविता 'पुष्प की अभिलाषा' राष्ट्र निर्माण के नौजवानों को प्रेरणा देती है। उसी तरह कई उपन्यास कहानियाँ भी समाज का दर्पण बन गई है।

पुष्प लाल सिंह के अनुसार "हिंदी साहित्य के संदर्भ में देखे तो कविता तथा कथा साहित्य में वैश्वीकरण का प्रभाव विशेष रूप से देखा जा सकते हैं । नए से नया और पुराने से पुराने कभी भी आज भूमंडलीकृत स्थितियों से विचलित हो उठे हैं और अपनी कविताओं में विभिन्न बिम्बों,प्रति को,मिथकों आदि के माध्यम से चित्रित कर रहे हैं।"4

निष्कर्ष :

विश्व व्यापी अलग अलग संस्कृति विचारों का परस्पर जुड़ाव तथा संस्कृतियों का आपस में समाहित हो ना, परिवर्तित हो ना,विस्तृत इ करण ही वैश्वीकरण कहलाता है।वैश्वीकरण के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक प्रभाव देखने को मिलते हैं। देश जब अन्य देशों से वैश्विक स्तर पर जुड़ता है तो हर तरह से परिवर्तन संभव होता है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण में संस्कृतियों का आवागमन होता है । विचारधाराओं पर प्रभाव पड़ता है। जिसमें पश्चिमी संस्कृति, वेशभूषा एवं भाषा को भी स्वीकार जाता है। अपनी भाषा का महत्त्व कायम रखने के लिए हमें प्रयत्नशील रहना होगा।

स्वतंत्रता संग्राम में वाहक के रूप में परिलक्षित होने वाली हिंदी से जनमानस तक पहुँचने वाली हिंदी को देवनागिरी लिपि में अपनाया गया। उसे राजभाषा के रूप में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, तकनीकी कक्ष आदि के रूप में पाते हैं।

संदर्भ

1. हिंदी भाषा उद्भव विकास और स्वरूप, हिंदी साहित्य का इतिहास (1973),भोलानाथतिवारीडॉ नागेंद्र,मयूर पेपरबैक्सइंदिरापुरम, पृष्ठ 16
2. हिंदी भाषा और उसका विकास,(2021), डॉ. अशोक तिवारी, हरीश प्रकाशन मंदिर,पृष्ठ 87
3. विशिष्ट निबंध संग्रह,(2012) सहेली शरण,नॉवेल्टी एंड कंपनी, अशोक राजपथ पटना,, पृष्ठ 272
4. भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास,(2012) पुष्पलाल सिंह,राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 73

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.